विताली
बिआन्की
नन्हे
नन्हे प्यार

विताली बिआन्की

अनुवादकः योगेन्द्र नागपाल,
संगमलाल मालवीय
चित्रकारः माई मितूरिच

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर ३०२००१

Bianki V.
FOREST HOMES
In Hindi

В. Бианки
ЛЕСНЫЕ ДОМИШКИ
На хинди

ISBN 5-05-002105-7

नन्हे नन्हे पर

नदी के किनारे ऊंची कगार के ऊपर नौजवान अबाबीलें उड़ रही थीं। ख़ुशी से चह-चहाती वे एक दूसरी का पीछा कर रही थीं, छुआ-छुई खेल रही थीं।

चिड़ियों के झुण्ड में एक नन्ही अबाबील गज़ब की चतुर और फुर्तीली थी। उसे छू पाना किसी के बस की बात न थी। जादुई उड़ान थी उसकी।

कोई चिड़िया उसका पीछा करती तो वह कभी इधर उड़ती, कभी उधर, कभी नीचे, कभी ऊपर और बस फुर्र से भाग निकलती। दूर कहीं उसके नन्हे नन्हे पंख ही झिलमिलाते नज़र आते।

अचानक नीले आकाश पर एक बाज़ उड़ता दिखलाई पड़ा। उसके पैने घुमावदार पंखों को भेदती हुई तेज़ हवा सीटी सी बजा रही थी।

अबाबीलें घबरा गयीं। सभी झट से तितर-बितर हो गयीं, अपनी-अपनी जान बचाती जहां मौक़ा मिला उड़ लीं।

नन्ही अबाबील ने आगे देखा न पीछे, सीधी नदी के पार उड़ गयी और फिर जंगल और झील को भी पार करती हुई बहुत दूर निकल गयी।

बाज़ से छुआ-छुई खेलना तो बहुत खतरनाक है। खासकर जब वह खुद पीछा कर रहा हो।

नन्ही अबाबील देर तक उड़ती रही, और आखिर थककर निढाल हो गयी। तब उसने पलटकर देखा — अब कोई भी उसका पीछा न कर रहा था। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ायी तो पाया कि यह जगह उसकी जानी-पहचानी नहीं है। एक नज़र नीचे की ओर देखा। नीचे नदी थी, पर यह तो उसकी अपनी नदी नहीं, कोई अनजानी ही नदी थी।

नन्ही अबाबील डर गयी।

उसे अपने घर वापस लौटने का रास्ता ही याद न रहा। याद भी कैसे रहता? वह तो बस किसी तरह जान बचाकर भागी थी।

दिन ढल चुका था। रात होने ही वाली थी। नन्ही अबाबील अब करे भी तो क्या?

बेचारी भय से सिहर गयी।

वह नीचे उतर आयी। नदी किनारे बैठकर रोने लगी। अचानक उसने पास से गुज़रती एक नन्ही चिड़िया देखी। उसके पंख पीले थे और गले में काली नेक-टाई थी।

नन्ही अबाबील खुश हो गयी, उसने पीले पंखवाली नन्ही चिड़िया से पूछा:

"क्या आप मुझे मेरे घर का रास्ता बता सकती हैं?"

"तुम आयी कहां से हो?" नन्ही-पीली चिड़िया ने पूछा।

"पता नहीं।" नन्ही अबाबील ने उत्तर दिया।

"फिर तो तुम्हें अपना घर ढूंढ़ने में बड़ी दिक्कत होगी।" पीले पंखवाली चिड़िया ने कहा। "सूरज डूबनेवाला है, थोड़ी ही देर में अंधेरा हो जायेगा। चलो, आज रात तुम मेरे यहां ठहर जाओ। मेरा नाम प्लोवर चिड़िया है। मेरा घर यहीं पास में है।"

झटपट, बस चार कदम दौड़कर उसने चोंच से रेत की तरफ़ इशारा किया। फिर वह थोड़ा झुकी, अपने नन्हे पैरों पर झूलते हुए बोली:

"यह रहा मेरा घर, अन्दर आ जाओ न।"

नन्ही अबाबील ने देखा कि यहां तो चारों तरफ़ रेत और कंकड़ ही फैले हुए हैं। घर कहलाने लायक तो वहां कुछ नहीं है।
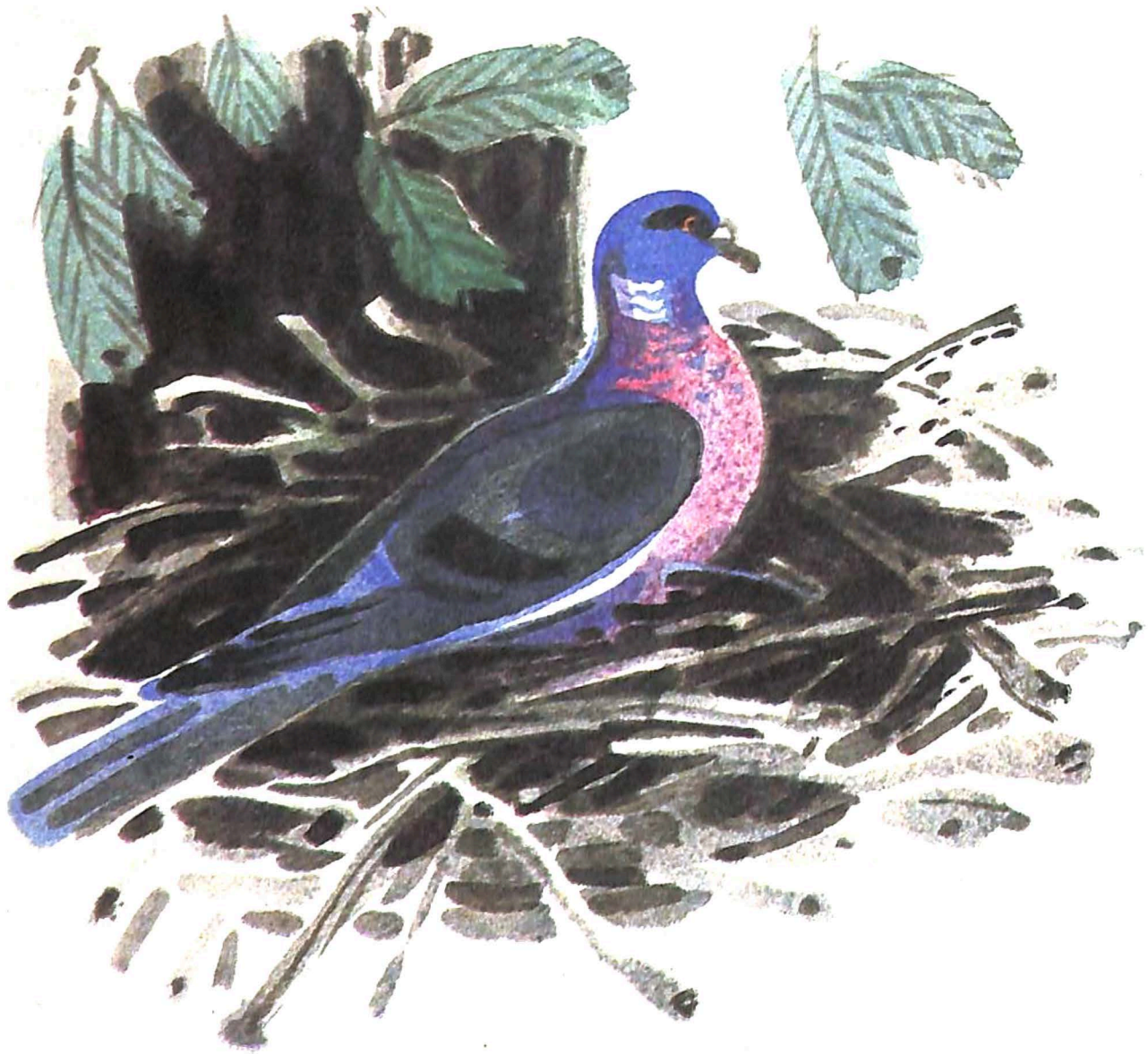
"क्या तुम मेरा घर नहीं देख पा रही हो? आओ, इधर देखो – यहां कंकड़ों के बीच अण्डे रखे हुए हैं।" प्लोवर चिड़िया ने ज़रा आश्चर्य से कहा।

नन्ही अबाबील बड़ी मुश्किल से ही यह देख पायी कि भूरे-भूरे धब्बोंवाले चार अण्डे कंकड़ों के बीच रेत पर रखे हुए हैं।

"क्यों, क्या बात है? लगता है तुम्हें मेरा घर पसन्द नहीं आया?"

आखिर नन्ही अबाबील क्या जवाब देती? अगर यह कहती कि ऐसा भी कहीं घर होता है तो घर की मालकिन बुरा मान जाती। इसलिये उसने कहा:

"मुझे खुले मैदान में ठण्डी रेत पर सोने की आदत नहीं..."

"अफ़सोस कि तुम्हें इसकी आदत नहीं," प्लोवर चिड़िया बोली। "तब उस चीड़ कुंज में जाओ। वहां पंडुकी की तलाश करो। उसके घर में फ़र्श है। वहां रात आराम से कट जायेगी।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" नन्ही अबाबील चहकी और उड़कर चीड़ कुंज में जा पहुंची। वहां जल्दी ही उसे पंडुकी का घर मिल गया। उसने पंडुकी से उसके घर में रात बिताने की अनुमति मांगी।

"ठीक है, अगर तुम्हें मेरा घर पसन्द है तो मुझे कोई एतराज़ नहीं। रात यहीं बिता सकती हो।" पंडुकी ने कहा।

मगर पंडुकी का घर कैसा था? सिर्फ़ फ़र्श ही फ़र्श था वहां! वह भी झरोखेदार! बस दो टहनियों पर तिनके डालकर घोंसला बनाया गया था। इन तिनकों पर ही पंडुकी के अण्डे रखे हुए थे। तिनकेदार झरोखों में से वे साफ़ दीख पड़ते थे।

नन्ही अबाबील हैरान हुई:

"आपके घर में तो फ़र्श ही है। दीवारें तक नहीं हैं। यहां आप सोती कैसे हैं?"

"अगर तुम्हें दीवारों से घिरा घर चाहिये तो जाओ, पीलक चिड़िया की तलाश करो। उसका घर तुम्हें पसन्द आयेगा।" यह कहकर पंडुकी ने नन्ही अबाबील को पीलक के घर का पता बता दिया:

"भोज कुंज में सबसे सुंदर वृक्ष पर रहती है वह।"

नन्ही अबाबील भोज कुंज में जा पहुंची। वहां उसे सभी वृक्ष हरे-भरे और सुंदर लगे। वह बड़ी देर तक पीलक का घर ढूंढ़ती रही। अन्त में उसने एक छोटा, किन्तु सुंदर-सा घर देखा जो पेड़ की एक छोटी सी शाखा पर लटक रहा था। महीन-महीन भूरे काग़ज़ से बने गुलाब जैसा घर देखने में बड़ा सुखकर लगा।

"कितना छोटा-सा घर है पीलक का! इसमें तो मेरे सिर छिपाने लायक जगह भी नहीं है।" नन्ही अबाबील ने सोचा। जैसे ही वह दरवाज़ा खटखटाने चली कि उसी वक्त नन्हे भूरे घर के भीतर से बर्रों का झुण्ड बाहर निकल आया। वे ज़ोर-ज़ोर से भनभनाने लगे, मंडराने लगे—अभी नन्ही अबाबील को डंक मारेंगे।

बस, फिर क्या था? नन्ही अबाबील ने आव देखा न ताव, वहां से भाग चली।

हरी-हरी पत्तियों के बीच वह उड़ी जा रही थी कि अचानक उसकी आंखों के सामने सुनहरी-सी, काली-काली कोई चीज़ कौंध गयी। ज़रा करीब आकर उसने देखा: वृक्ष की डाल पर सुनहरे रंगवाली एक मोहक चिड़िया बैठी है जिसके पंख काले हैं।

"कहां भागी जा रही हो, नन्ही अबाबील?" सुनहरी चिड़िया ने ज़ोर से आवाज़ देकर पूछा।

"पीलक का घर ढूंढ़ रही हूं," नन्ही अबाबील ने जवाब दिया।

"मेरा ही नाम पीलक है। मेरा घर यहीं है। यह देखो, इस सुंदर भोज वृक्ष पर!"

नन्ही अबाबील ने उस स्थान को देखा जहां पर पीलक का घर था। लेकिन वह हरी पत्तियों और सफ़ेद डालियों के अलावा कुछ न देख सकी। फिर उसने ज़रा ध्यान से देखा, तब उसे कुछ दिखलाई दिया। उसने एक ठण्डी आह ली।
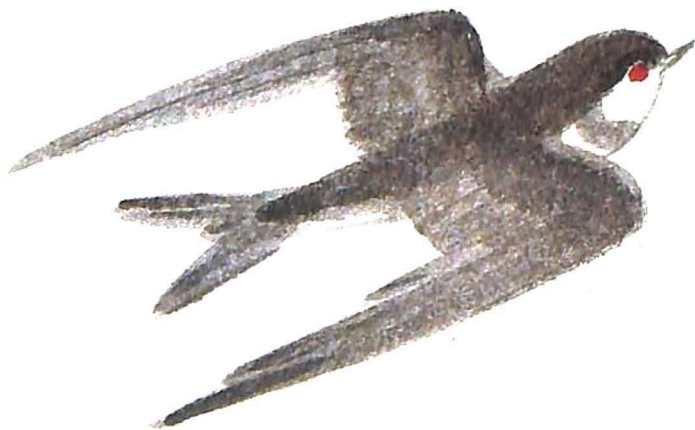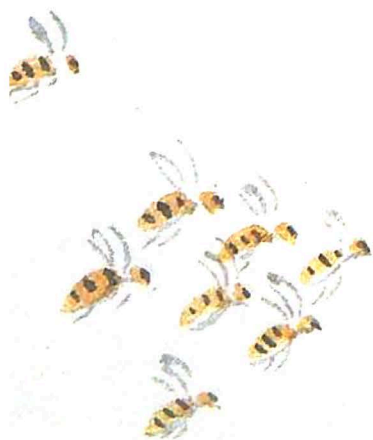
वहां ज़मीन से बहुत ऊपर पेड़ की एक नन्ही शाखा के सहारे महीन तिनकों से बुनी एक छोटी, हल्की गोलाकार डोलची लटक रही थी।

नन्ही अबाबील को समझते देर न लगी कि यह कौन सी वस्तु है! वह तो सचमुच का एक नन्हा सा ज़ेबदार घर था। मुलायम रेशों, घास के तिनकों और भोज की छाल के महीन टुकड़ों को जोड़कर, ऊन और बाल से बुनकर, यह घर बनाया गया था।

"हाय रे, घर भी क्या खूब बनाया है! हवा के साथ-साथ उड़ता और झूलता है। न बाबा न, यहां ठहरना मेरे बस की बात नहीं। इसे हिलता-डुलता देखकर मुझे तो चक्कर आ रहा है। यह तो किसी भी वक्त हवा में उड़ जायेगा। और फिर इस घर में छत भी नहीं है!"

सुनहरी चिड़िया को यह बुरा लगा। वह बोली:

"तब तुम चिफ़-चैफ़ के पास जाओ। तुम्हें खुली हवा में सोने से डर लगता है तो उसका छप्परदार घर ज़रूर पसन्द आयेगा।"

नन्ही अबाबील फुर्र से उड़कर चिफ़-चैफ़ चिड़िया के घर जा पहुंची।

पीले रंग की नन्ही चिफ़-चैफ़ चिड़िया उसी भोज वृक्ष के नीचे सूखी घास में रहती थी, जहां पीलक चिड़िया का हवा में झूलता हुआ घर था।

नन्ही अबाबील को उसका छप्परदार घर पसन्द आ गया। यह सूखी घास और काई से बना था। "ऐसा आरामदायक घर होना चाहिये! इसमें फ़र्श है, दीवारें हैं और छत भी। और सोने के लिये नरम परोंवाला गुदगुदा-सा बिस्तर भी। बिल्कुल हमारे घर जैसा है।"

चिफ़-चैफ़ चिड़िया ने मेहमान का खुशी-खुशी स्वागत किया। अभी उसने अपने मेहमान के लिये बिस्तर लगाना शुरू ही किया था कि ज़मीन हिलने लगी। नन्ही अबाबील चौकन्नी

होकर उस धड़धड़ाती आवाज़ को सुनने लगी। लेकिन चिफ़-चैफ़ ने समझाते हुए कहा:

"घबड़ाओ मत! कुंज की ओर घोड़े आ रहे हैं। यह उनके दौड़ने की आवाज़ है।"

"यह तो बड़ी खतरनाक बात है। अगर किसी घोड़े का पांव इस घर की छत पर पड़ गया तो वह रौंदी तो नहीं जायेगी?" नन्ही अबाबील ने पूछा।

चिफ़-चैफ़ ने उदास होकर सिर्फ़ सिर हिला दिया और कुछ न बोली।

"बाप रे बाप! कितनी खतरनाक जगह है यह!" पलक झपकते ही नन्ही अबाबील उस घर से बाहर निकल आयी और बोली:

"यहां तो मैं सारी रात जागती रहूंगी। बस, यही ख्याल बना रहेगा कि कुचलकर मर न जाऊं। हमारा घर तो बड़ा सुरक्षित है। वहां न कोई तुम्हें कुचल सकता है और न ज़मीन पर धकेल ही सकता है।"
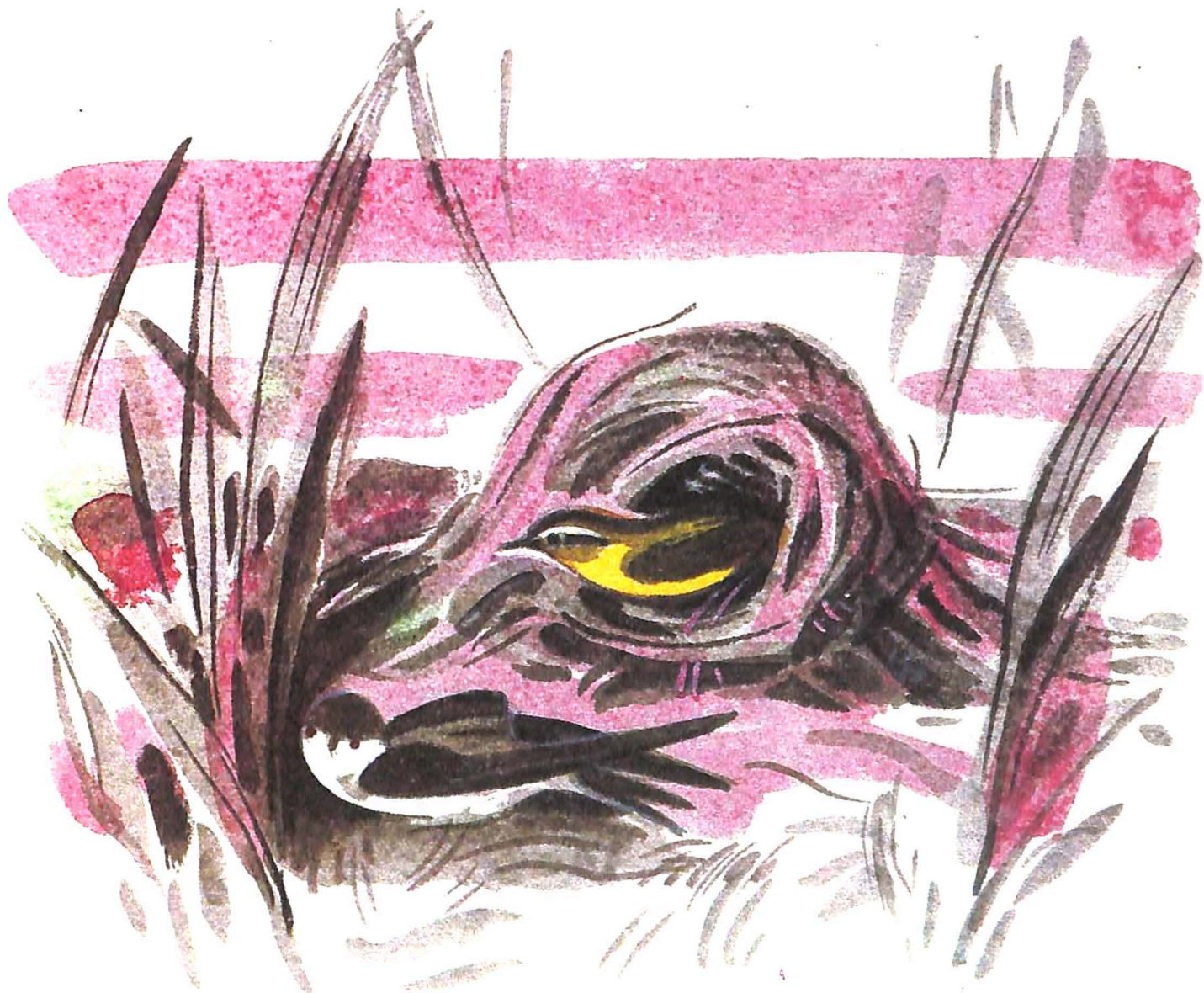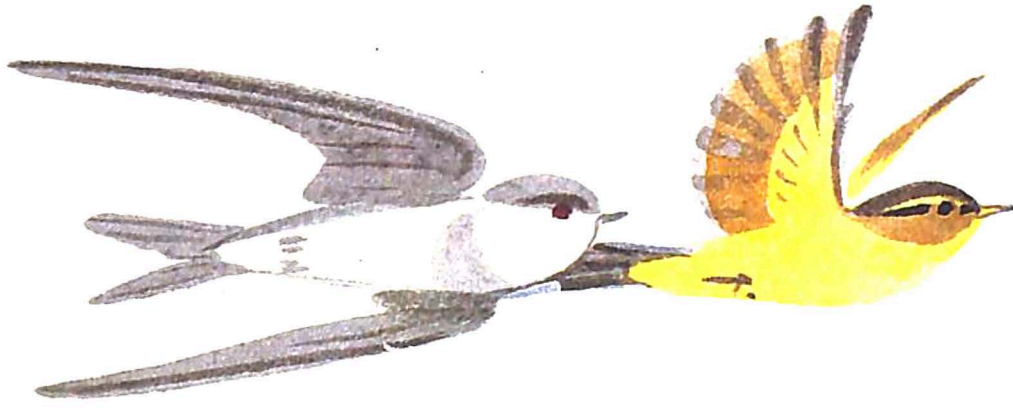
"लगता है तुम्हारा घर सींगोंवाली चिड़िया के घर जैसा है," चिफ़-चैफ़ ने नन्ही अबाबील से कहा। "उसका घर पेड़ पर नहीं है, सो हवा उसे उजाड़ नहीं सकती। हमारे घर की तरह वह ज़मीन पर भी नहीं है, सो कोई पैरों से रौंद भी नहीं सकता। चाहो तो तुम्हें उसके घर तक छोड़ आऊं?"

"हां-हां, छोड़ आइये!" नन्ही अबाबील ने कहा।

और वे दोनों सींगोंवाली चिड़िया के घर की ओर झील के किनारे उड़ चले।

झील के बीचोंबीच एक नन्हा सा सरकण्डोंवाला टापू था जिस पर बड़े सिरवाली एक चिड़िया बैठी थी। उसके सिर पर पंख इस तरह उठे हुए थे जैसे नन्हे-नन्हे सींग उभरे हों।

चिफ़-चैफ़ ने नन्ही अबाबील को वह टापू दिखला दिया और विदा लेते हुए कहा कि वह सींगोंवाली चिड़िया से पूछकर उसके यहां रात काट ले।

नन्ही अबाबील उड़कर उस छोटे से टापू पर जा पहुंची। उसे यह देखकर हैरानी हुई कि यह टापू तो झील पर तैर रहा है। टापू भी क्या, बस तैरते हुए सूखे सरकण्डे का एक ढेर ही था। ढेर के बीचोंबीच एक छोटा-सा गड्ढा था। गड्ढे पर दलदल की मुलायम घास करीने से बिछी हुई थी। घास के उस बिछौने पर सींगोंवाली चिड़िया के अण्डे रखे हुए थे। ऊपर से सूखी घास की नर्म-नर्म चादर से ढंके हुए थे।

सींगोंवाली चिड़िया तैरती नाव जैसे टापू के किनारे बैठी मज़े से झील की सैर कर रही थी।

नन्ही अबाबील ने सींगोंवाली चिड़िया से बताया कि वह रात में ठहरने के लिये घर ढूंढ़ रही है। पर उसे अब तक माफ़िक घर नहीं मिल पाया है। यह कहकर उसने सींगों-वाली चिड़िया से उसके यहां रात बिताने की अनुमति मांगी।

"लहरों पर तैरते घर में तुम्हें डर तो नहीं लगेगा?" सींगोंवाली चिड़िया ने पूछा।

"क्या आपका घर रात में किनारे पर नहीं रुकता?"

"मेरा घर कोई नाव है क्या? जिधर हवा का रुख होगा, उधर ही वह बहता रहेगा। बस, ऐसे ही सारी रात हिचकोले खाते रहेंगे।"

"हाय, मुझे तो यहां डर लगता है। मैं अपने घर जाना चाहती हूं।" अबाबील चिड़िया ने कहा।

यह सुनकर सींगोंवाली चिड़िया को बड़ा गुस्सा आया। उसने फटकारते हुए कहा:

"अजीब नकचढ़ी है तू! तुझे तो कोई खुश नहीं कर सकता। चल, भाग जा यहां से और खुद ही अपनी पसन्द का घर ढूंढ़ ले।"

इस तरह सींगोंवाली चिड़िया ने नन्ही अबाबील को डांटकर भगा दिया।

उदास अबाबील पंख फड़फड़ाती वहां से उड़ चली। वह उड़ती जाती और बिना आंसू के रोये जाती: पक्षियों को तो आंसू बहाना नहीं आता।

रात की काली चादर फैलती जा रही थी: सूरज डूब गया था।

उड़ते-उड़ते वह एक घने जंगल तक जा पहुंची, देखती क्या है कि एक ऊंचे फ़र वृक्ष की एक बड़ी सी डाल पर एक घर बना हुआ है। पतली टहनियों और शाखाओं से बना गोल-गोल घर था। घर के भीतर मुलायम, गरम काई का बिस्तर बिछा हुआ था।

"यही है अच्छा घर," अबाबील ने सोचा। "मज़बूत भी है और छतदार भी।"

नन्ही अबाबील उड़ती हुई इस बड़े से घर के पास आयी। उसने अपनी चोंच से घर की दीवार ठकठकायी और रोनी आवाज़ में बोली :

"मेहरबानी करके रात मुझे यहीं गुज़ार लेने दीजिये।"

अचानक किसी जानवर का लाल बालों, डरावनी मूंछों और पीले-पीले दांतोंवाला थूथुन दिखाई पड़ा। दैत्य की शक्लवाले इस जानवर ने दांत पीसकर कहा :

"क्या खूब! अरे, गिलहरियों के घर पर पक्षी कब से बसेरा लेने लगे?"

अबाबील का तो डर के मारे दम ही निकल गया। वह ठिठककर पीछे हटी, ऊंची उड़ान भरकर जंगल के ऊपर पहुंच गयी और फिर उसने आगे देखा न पीछे, उड़ती गयी, उड़ती गयी और आखिर थककर निढाल हो गयी।

तब उसने पलटकर देखा – अब कोई भी उसका पीछा न कर रहा था। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ायी – अरे, यह तो जानी-पहचानी जगह है। उसने एक नज़र नीचे की ओर देखा। नीचे नदी थी – अरे, यह तो उसकी अपनी ही प्यारी नदी है।

वह तीर की तरह नदी तक उतर आयी, वहां से उसने फिर एक उड़ान ली और नदी की खड़ी कगार के ऐन सिरे तक जा पहुंची।

और वहां वह गायब हो गयी।

कगार में बहुत से सूराख थे। अबाबीलों के घर थे। नन्ही अबाबील यहीं किसी सूराख में झट से गायब हो गयी। और दौड़ती हुई खूब लम्बी, संकरी सुरंग के आखिरी सिरे तक जा पहुंची। फिर वह फुदककर एक लम्बे-चौड़े गोलाकार कमरे में घुस गयी।

वहां बहुत देर से मां उसका इंतज़ार कर रही थी।

उस रात थकी हुई नन्ही अबाबील सूखी घास, घोड़े के बालों और परोंवाले मुलायम, गरम बिछौने पर मीठी नींद सोयी।

शुभ रात्रि !

लाल टीला

एक था लाल सिरवाला गौरा यानी नर गौरैया। उसका नाम था चीक। जब वह एक साल का हुआ, तो उसने चिरीका नाम की गौरैया से शादी कर ली। उन दोनों ने अपना घर बसाने की सोची।

"चीक," गौरैयों की बोली में चिरीका बोली, "हम अपना घोंसला कहां बनायेंगे? हमारे बाग में कोई भी कोटर खाली नहीं है।"

"हा-हा, यह भी कोई बड़ी बात है!" गौरैयों की ही बोली में चीक ने जवाब दिया। "किसी पड़ोसी को घर से निकाल देंगे और उसके कोटर पर कब्ज़ा कर लेंगे।"

वह बड़ा लड़ाकू था और चिरीका को अपनी बहादुरी दिखाने का ऐसा अच्छा अवसर पाकर बहुत खुश था। इससे पहले कि शर्मीली चिरीका उसे रोक पाती, वह डाली से उड़ा और कोटरवाले बड़े पेड़ पर पहुंच गया। इस कोटर में उसका पड़ोसी रहता था। वह भी चीक की ही तरह एक जवान गौरा था।

कोटर का मालिक घर के आस-पास कहीं नहीं था। "अभी इस कोटर में घुस जाता हूं," चीक ने सोचा, "और जब इसका मालिक आयेगा, तो चिल्लाने लगूंगा कि वह मेरा घर छीनना चाहता है। बड़े-बूढ़े उड़ आयेंगे और फिर पड़ोसी को मज़ा चखा देंगे!"

वह बिल्कुल भूल ही गया था कि पड़ोसी की भी शादी हो चुकी है और उसकी पत्नी गौरैया पांच दिन से कोटर में घोंसला बना रही है।

चीक ने छेद में सिर घुसाया ही था कि अंदर से चटाक से उसकी नाक पर वार हुआ। चीं-चीं करता चीक कोटर से पीछे हटा। और पीछे से उसका पड़ोसी सीधा उस पर झपटा। एक चीख के साथ दोनों हवा में ही टकराये और फिर ज़मीन पर गिर पड़े। गिरते ही वे एक दूसरे से गुंथ गये और लड़ते-लड़ते नाली में लुढ़क गये।

चीक बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था और उसके पड़ोसी की हालत ख़राब थी।

लेकिन लड़ाई का शोर सुनकर आस-पड़ोस के गौर-गौरैयां उड़ आये। उन्होंने झटपट पता लगा लिया कि कौन सच्चा है, कौन झूठा, और फिर चीक को ऐसा खसोटा, ऐसा खसोटा कि बेचारा पता नहीं कैसे उनसे बच कर भागा।

किन्हीं अनजानी झाड़ियों में जाकर चीक को होश आया। वह पहले कभी भी इन झाड़ियों में नहीं आया था। बेचारे के सारे शरीर में दर्द हो रहा था।

उसके पास ही सहमी-सी चिरीका बैठी थी।

"चीक!" उसने ऐसी उदास आवाज़ में कहा कि अगर गौरैयों को रोना आता तो चीक ज़रूर रो पड़ता। "चीक, अब हम कभी अपने बाग नहीं लौट सकेंगे! अब हम अपना घोंसला कहां बनायेंगे?"

चीक भी समझता था कि अब उसे कभी भी अपने बाग के गौरे-गौरैयों की नज़रों में नहीं आना चाहिये: नहीं तो वे उसे जान से मार देंगे। फिर भी वह चिरीका को यह नहीं दिखाना चाहता था कि वह डर रहा है। उसने चोंच से अपने खसोटे हुए पंख ठीक किये, थोड़ी देर आराम से सांस ली और फिर लापरवाही से बोला –

"हा-हा, यह भी कोई बड़ी बात है! हम कोई दूसरी जगह ढूंढ़ लेंगे, इससे भी अच्छी।"

और वे नयी जगह ढूंढ़ने उड़ चले।

झाड़ियां पार करते ही उन्हें एक सुंदर नीली नदी दिखायी दी। नदी के उस पार लाल मिट्टी और रेत का एक बहुत ही ऊंचा टीला था। टीले के बिल्कुल ऊपर बहुत-से गड्ढे और बिल थे। बड़े गड्ढों के पास डोम कौओं और शिकरा-बाज़ों के जोड़े बैठे थे; छोटे गड्ढों में तेज़ अबाबीलें आ-जा रही थीं। कगार के ऊपर उनका सफ़ेद झुंड हल्के बादल की तरह उड़ रहा था।

"देखो तो, यहां कितना अच्छा है," चिरीका ने कहा, "चलो, हम भी लाल टीले पर अपना घोंसला बना लेते हैं।"

चीक ने सहमी नज़रों से बाज़ों और डोम कौओं की ओर देखा। वह सोच रहा था, "अबाबीलों को तो कोई डर नहीं, वे खुद अपने लिये बिल खोदती हैं। पर मुझे फिर पराया घोंसला छीनना पड़ेगा।" और फिर से उसके सारे शरीर में दर्द होने लगा।

"नहीं," उसने कहा, "मुझे यहां अच्छा नहीं लगता। ऐसे शोर-गुल से तो मैं बहरा हो जाऊंगा।"

और वे आगे उड़ चले।

आगे एक बाग था और बाग के पीछे घर था। घर के पास एक कोठरी थी।

चीक और चिरीका कोठरी की छत पर उतरे। चीक ने उतरते ही देख लिया कि यहां कोई पक्षी नहीं है – न गौरैया, न अबाबील।

"देखो तो, कितनी अच्छी जगह है यह," उसने खुशी-खुशी चिरीका से कहा, "आंगन में कितने दाने बिखरे पड़े हैं, हम यहां अकेले रहेंगे और किसी को भी इधर नहीं आने देंगे।"

"श-श-श!" चिरीका फुसफुसायी। "देखो तो, वहां दरवाज़े के पास कैसा डरावना जानवर बैठा है।"

सचमुच दरवाज़े के पास मोटा लाल बिल्ला सो रहा था।

"हा-हा, यह भी कोई बड़ी बात है!" चीक ने बड़ी बहादुरी से कहा। "वह हमारा क्या कर लेगा? अभी मैं उसे तमाशा दिखाता हूं।"

वह छत से उड़ा और इतनी तेज़ी से बिल्ले की ओर झपटा कि चिरीका बेचारी की डर के मारे चीख निकल गयी। लेकिन चीक ने बड़ी सफ़ाई से बिल्कुल बिल्ले की नाक तले से रोटी का टुकड़ा उठाया और फटाफट छत पर पहुंच गया।

बिल्ला हिला-डुला तक नहीं, बस एक आंख थोड़ी-सी खोलकर उसने शैतान चिड़िया को तीखी नज़र से देख भर लिया।

"देखा?" चीक शेखी मारने लगा। "और तुम हो कि डरती हो!"

चिरीका ने उससे बहस करना ठीक न समझा और वे दोनों घोंसले के लिये अच्छी-सी जगह ढूंढ़ने में लग गये।

कोठरी की छत के नीचे एक बड़ी दरार उन्हें पसंद आ गयी। और वे यहां घास-फूस, पंख-पर और घोड़े के बाल चुन-चुन कर लाने लगे।

अभी एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि चिरीका ने घोंसले में पहला अंडा दिया। वह भूरे-गुलाबी धब्बों से भरा था। चीक उसे देखकर इतना खुश हुआ कि उसने अपनी पत्नी और अपने सम्मान में एक गीत बना डाला–

चिरी, चीक-चीक
चिरीक, चीक-चीक
चीकी-चीकी-चीकी-चीकी
चीकी, चीक, चिरीक!

इस गीत का कोई अर्थ नहीं था, परंतु जंगले पर उछलते हुए उसे गाने में बहुत मज़ा आता था।

जब घोंसले में छह अंडे हो गये, तो चिरीका उन्हें सेने लगी।

चीक उसके लिये कीड़े-मकोड़े पकड़ने उड़ गया। चिरीका को अब नरम-नरम खाना चाहिये था। चीक को लौटने में थोड़ी देर हो गयी। चिरीका देखना चाहती थी कि वह कहां है।

उसने दरार में से सिर बाहर निकाला ही था कि छत से लम्बे-लम्बे नाखूनोंवाला पंजा उस पर झपटा। चिरीका फटाक से उड़ी। उसके परों का बड़ा-सा गुच्छा बिल्ले के

पंजे में आ गया। थोड़ी-सी देर और हो जाती, तो बस चिरीका बेचारी की रामकथा खत्म हो जाती।

बिल्ले ने दरार में पंजा डाला और एक बार में ही सारा का सारा घोंसला बाहर निकाल लिया। चिरीका बहुत चीखी-चिल्लायी। तब तक चीक भी उड़ आया था, वह बड़ी बहादुरी से बिल्ले पर वार करता रहा, किन्तु कोई भी उनकी सहायता के लिये नहीं आया। बदमाश बिल्ला उनके छहों अनमोल अंडे हड़प कर गया। हवा ने उनका हल्का-फुल्का घोंसला छत से उठाकर ज़मीन पर फेंक दिया।

उसी दिन गौरैयों ने कोठरी छोड़ दी और लाल बिल्ले से दूर बाग में बस गये।

थोड़े ही समय बाद बाग में उन्हें एक खाली कोटर मिल गया। और वे फिर घास-फूस इकट्ठा करने लगे। पूरा एक हफ़्ता वे घोंसला बनाने में लगे रहे।

मोटी चोंचवाले चटक का जोड़ा, रंगबिरंगे मक्खीमार पक्षी का जोड़ा और छैले-से सुनहरे चटक का जोड़ा – ये उनके पड़ोसी थे। हर पड़ोसी के पास अपना घर था और सबके लिये खाने को भी बहुत कुछ था, फिर भी चीक ने सब से लड़ाई मोल ले ली। बस यों ही – अपनी बहादुरी और ताकत दिखाने के लिये।

लेकिन चटक उससे अधिक ताकतवर था और उसने शैतान चीक को अच्छी तरह से खसोट लिया। तब चीक होशियारी से काम लेने लगा : अब वह लड़ाई-झगड़ा नहीं करता था, बस जब कभी कोई पड़ोसी पास से उड़ रहा होता, तो वह फूलकर बैठ जाता और चोंच ऊंची करके चहचहाने लगता। पड़ोसी उस पर इन बातों के लिये नाराज़ नहीं होते थे, उन्हें तो खुद भी दूसरों के सामने अपनी ताकत और हिम्मत की डींग हांकने में मज़ा आता था।

सबसे पहले चटक ने खतरे की सूचना दी। वह गौरैयों के घर से सबसे दूर रहता था, किंतु चीक ने उसकी ऊंची-ऊंची आवाज़ सुन ली।

"जल्दी, जल्दी!" चीक ने चिरीका को आवाज़ दी, "सुन रही हो: चटक बोल रहा है, ज़रूर कोई खतरा है!"

वाकई, कोई खतरनाक जानवर उनकी ओर आ रहा था। चटक के बाद सुनहरे चटक ने आवाज़ दी और फिर रंगबिरंगा मक्खीमार पक्षी भी बोल उठा। मक्खीमार पक्षी उनसे सिर्फ़ चार पेड़ छोड़कर रहता था। अगर उसने भी दुश्मन को देख लिया है, तो ज़रूर दुश्मन पास ही है।

चिरीका कोटर में से निकलकर चीक के पास डाली पर बैठ गयी। पड़ोसियों ने उन्हें खतरे की चेतावनी दे दी थी और वे उसका सामना करने के लिये तैयार थे।

झाड़ियों में लाल-लाल झबरीला कुछ दिखायी दिया और थोड़ी ही देर बाद उनका जानी दुश्मन – लाल बिल्ला – वहां से निकला। उसने देखा कि पड़ोसियों ने गौरैयों को सावधान कर दिया है और अब वह चिरीका को घोंसले में नहीं पकड़ पायेगा। उसे बहुत गुस्सा आ रहा था।

अचानक बिल्ले की दुम हिलने लगी और आंखें मिंच गयीं: उसे कोटर दिखायी दे
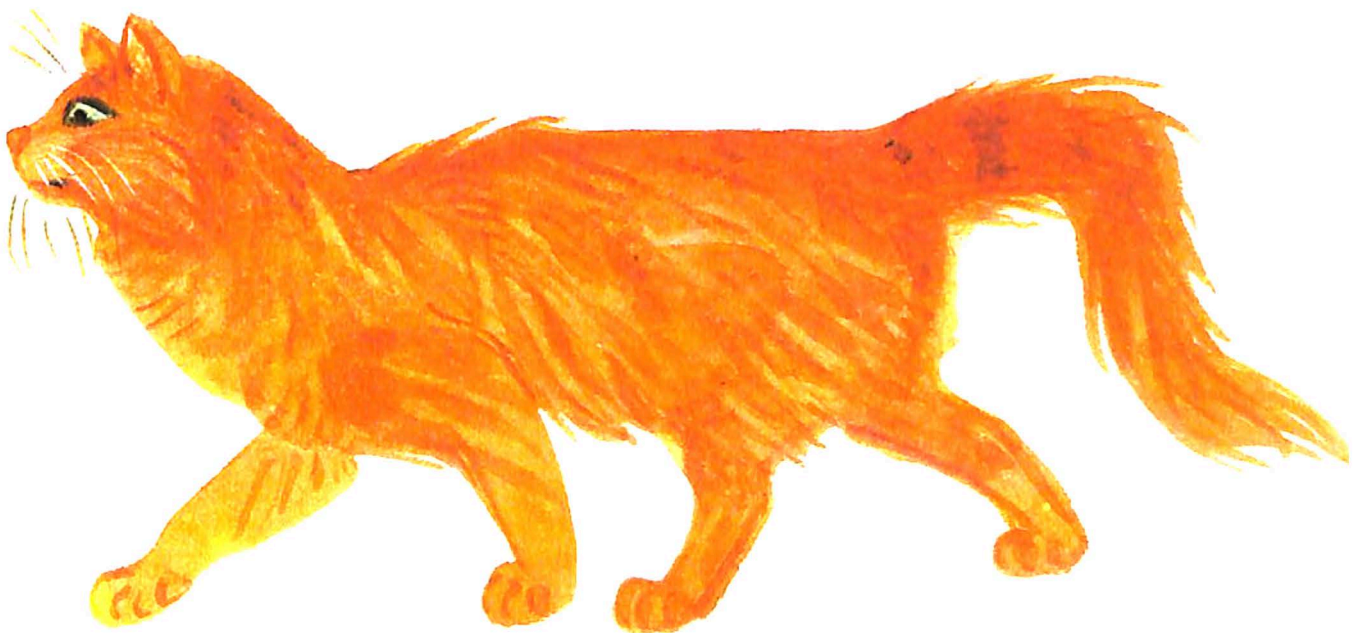
गया। गौरैया के आधे दर्जन अंडों का नाश्ता कोई बुरा नहीं, है न? बिल्ले के मुंह में पानी आ गया। उसने पेड़ पर चढ़कर कोटर में पंजा डाला।

चीक और चिरीका ने बाग भर में शोर मचा दिया। परन्तु यहां भी कोई उनकी सहायता को नहीं आया। पड़ोसी अपनी-अपनी जगह बैठे डर के मारे चीख-चिल्ला रहे थे। सब चिड़ियों को अपने-अपने घर का डर था।

बिल्ले ने घोंसले में नाखून गाड़कर उसे कोटर में से निकाल लिया।

किन्तु इस बार बिल्ला ज़रा जल्दी आ गया था: बहुत ढूंढ़ने पर भी उसे घोंसले में कोई अंडा नहीं मिला। तब उसने घोंसला फेंक दिया और खुद ज़मीन पर उतर आया। चिड़ियां उसके पीछे-पीछे चिल्ल-पों मचाती रहीं।

झाड़ियों के पास आकर बिल्ला रुका और चिड़ियों की ओर मुड़कर उन्हें ऐसे देखा, मानो कह रहा हो: "कोई बात नहीं, बच्चू, कोई बात नहीं! मुझसे बचकर कहां जाओगे। बनाओ नया घोंसला, जहां चाहो अंडे दो, मैं वहीं पहुंच जाऊंगा और तुम्हारे सारे के सारे अंडे और साथ में तुम्हें भी खा जाऊंगा।" और वह ऐसे फुफकारा कि चिरीका डर से कांप उठी।

बिल्ला चला गया और चीक-चिरीका अपने उजड़े घोंसले पर आंसू बहाते बैठे रह गये।

अन्त में चिरीका बोली :

"चीक, कुछ दिनों बाद मुझे फिर अंडे देने हैं। चल, जल्दी से कहीं नदी के पार कोई जगह ढूंढ़ लेते हैं। वहां तो बिल्ला नहीं आ सकेगा।"

उसे पता नहीं था कि नदी पर पुल है और बिल्ला अक्सर इस पुल पर घूमता है। चीक भी यह नहीं जानता था।

"चल, उड़ चलें," वह चिरीका की बात मान गया।

और वे उड़ चले।

थोड़ी ही देर में वे लाल टीले तक पहुंच गये।

"आओ, हमारे पास, हमारे पास आओ!" अबाबीलों ने उन्हें अपनी अबाबीली बोली में बुलाया। "हम लाल टीले पर मिल-जुलकर, हंसते-गाते रहते हैं।"

"हां, हां," चीक ने उन्हें जवाब दिया, "जब आ गये तो लड़ाई करोगी!"

"हम भला लड़ाई क्यों करेंगी?" अबाबीलों ने कहा। "यहां नदी पर सबके लिये कीट-पतंगे बहुत हैं, और हमारे लाल टीले पर खाली गड्ढे भी बहुत हैं, जहां अच्छा लगे रहो।"

"मगर बाज़? और डोम कौए?" चीक नहीं मान रहा था।

"बाज़ खेत में चूहों और टिड्डियों का शिकार करते हैं। हमें वे कुछ नहीं कहते। हम सब मिल-जुलकर रहते हैं।"

चिरीका भी कहने लगी –

"चीक, हम कितनी ही जगहें देख आये हैं, पर इससे सुंदर जगह कोई नहीं देखी। चलो यहीं रहेंगे।"

"ठीक है," चीक भी मान गया, "जब उनके पास खाली गड्ढे भी हैं और लड़ाई-झगड़ा भी कोई नहीं करेगा, तो रह लेते हैं।"

वे दोनों नदी के पास उड़ आये और सचमुच ही, न किसी बाज़ ने उन्हें छेड़ा और न ही किसी डोम कौए ने।

तब वे अपना मनपसंद गड्ढा ढूंढ़ने में लग गये – ऐसा गड्ढा, जो बहुत गहरा भी न हो, और उसका मुंह भी खुला हो। ऐसे दो गड्ढे उन्हें पास-पास ही मिल गये।

एक में उन्होंने घोंसला बनाया और उसमें चिरीका अंडे सेने लगी, दूसरे में चीक सोता था।

अबाबीलें, बाज़ और डोम कौए – सबके बच्चे पहले ही पैदा हो चुके थे। अकेली चिरीका अपने अंधेरे गड्ढे में धीरज से बैठी थी। चीक सुबह से शाम तक उसके लिये खाना लाता था।

दो हफ़्ते गुज़र गये। लाल बिल्ला उन्हें दिखायी नहीं दिया। चीक-चिरीका उसके बारे में भूल गये।

चीक बड़ी बेसब्री से नन्हे चिड़ों का इंतज़ार कर रहा था। हर बार जब वह चिरीका के लिये कीड़ा या मक्खी लाता, तो उससे पूछता –

"ठकठका रहे हैं?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"कब ठकठकायेंगे, जल्दी ही?"

"हां, हां, जल्दी ही," चिरीका बड़े धीरज से जवाब देती।

एक दिन सुबह-सुबह चिरीका ने उसे अपने घोंसले में से आवाज़ दी –

"जल्दी आओ, जल्दी, एक ठकठका रहा है।"

चीक फ़ौरन घोंसले में आ गया। यहां पर उसने सुना कैसे एक अंडे में चिड़ा अपनी नाज़ुक चोंच से छिलके पर हलकी-हलकी चोटें कर रहा था।

चिरीका बड़ी सावधानी से उसकी मदद कर रही थी: उसने कई जगहों पर छिलके को थोड़ा-थोड़ा तोड़ दिया था।
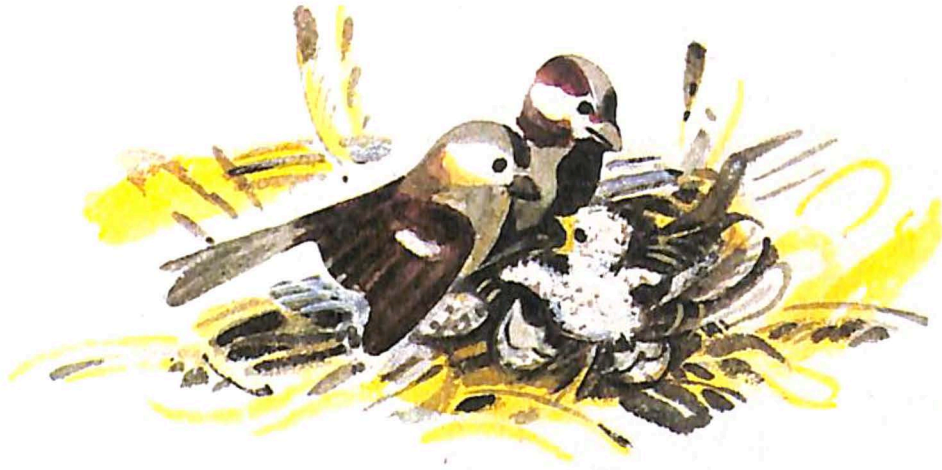
कुछ मिनट बीतने पर अंडे में से बिल्कुल नन्हा-सा, नंगा, अंधा चिड़ा दिखायी दिया।

पतली-सी गर्दन पर उसका बड़ा-सा नंगा सिर झूल रहा था।

"अरे, कितना अजीब है!" चीक हैरान हुआ।

"ज़रा भी अजीब नहीं!" चिरीका नाराज़ हो गयी। "बहुत प्यारा चिड़ा है। तुम यहां खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? जल्दी से छिलके लेकर घोंसले से दूर कहीं फेंक आओ।"

जब तक चीक छिलके फेंककर लौटा, दूसरा चिड़ा अंडे में से निकल आया और तीसरे ने ठकठकाना शुरू कर दिया।

ठीक उसी समय लाल टीले पर बेचैनी फैल गयी। पक्षियों ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया।

गौरैयों ने अपने बिल में अबाबीलों की तीखी आवाज़ सुनी।

चीक भागा-भागा बाहर गया और उसी क्षण लौट आया। उसने बताया कि लाल बिल्ला टीले पर चढ़ता आ रहा है।

"उसने मुझे देखा है!" चीक चिल्ला रहा था। "वह अभी यहां पहुंच जायेगा और चिड़ों के साथ-साथ हमें भी खा जायेगा। चलो, चलो, जल्दी यहां से उड़ चलें!"

"नहीं," चिरीका ने उदास आवाज़ में कहा। "जो हो सो हो, पर मैं अपने नन्हे चिड़ों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी।"

चीक ने बहुत बुलाया, पर चिरीका अपनी जगह से नहीं हिली।

तब चीक बिल में से निकल आया और पागलों की तरह बिल्ले पर टूट पड़ा। और

बिल्ला था कि टीले पर चढ़ता ही जा रहा था। अबाबीलों के झुंड उसके ऊपर मंडरा रहे थे, बाज़ और डोम कौए भी चीखते हुए उनकी सहायता के लिये आ रहे थे।

बिल्ला तेज़ी से टीले पर चढ़ गया। उसने बिल के किनारे पंजा धंसा दिया।

बस अब सिर्फ़ बिल में दूसरा पंजा घुसाने और चिरीका तथा चिड़ों समेत घोंसले को बाहर निकालने भर की देर थी।

किन्तु ठीक इसी क्षण एक बाज़ ने बिल्ले की दुम में चोंच मारी, दूसरे ने उसके सिर पर और दो डोम कौओं ने पीठ पर चोंचें मारीं।

बिल्ला पीड़ा से घुरघुरा उठा। वह पीछे मुड़कर अगले पंजों से चिड़ियों पर झपटना चाहता था। लेकिन वे बचकर उड़ गयीं और बिल्ला कलाबाज़ी खाता नीचे लुढ़कने लगा। टीले पर कोई ऐसी चीज़ न थी, जिसे पकड़कर वह रुक पाता; रेत उसके साथ-साथ गिर रही थी। जितनी दूरी, उतनी ही तेज़ी से वह लुढ़कता-पुढ़कता जा रहा था।

पक्षियों को अब बिल्ला दिखायी ही नहीं दे रहा था। टीले पर से लाल मिट्टी का बादल नीचे उड़ता जा रहा था। धड़ाम! – और बादल पानी पर थम गया। जब बादल छंटा, तो पक्षियों को नदी के बीचोंबीच बिल्ले का भीगा सिर दिखायी दिया। पीछे-पीछे चीक उसकी खोपड़ी पर चोंच मारता उड़ रहा था।

बिल्ले ने नदी पार की और दूसरे किनारे पर निकला। चीक ने यहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। बिल्ला इतना सहमा हुआँ था कि उसने चीक पर झपटने की हिम्मत भी नहीं की। और अपनी गीली दुम ऊंची उठाकर सरपट अपने घर की ओर भाग लिया।

तब से कभी किसी ने लाल टीले पर लाल बिल्ले को नहीं देखा है।
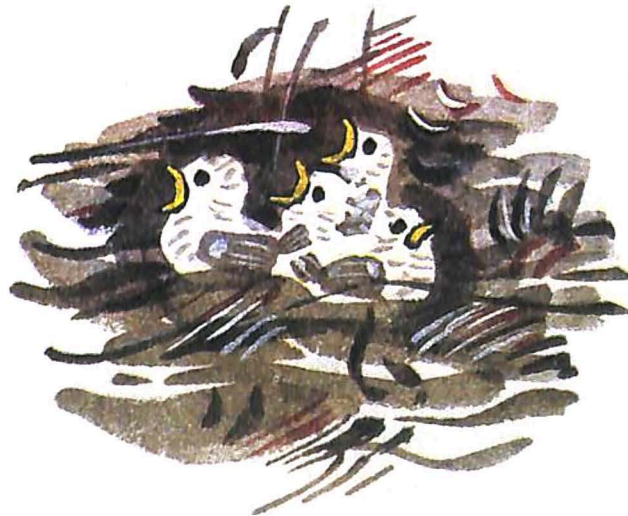
चींटी पहुंची अपने घर

एक चींटी भोज वृक्ष की ऊंची फुनगी पर जा चढ़ी और उसने नीचे झांककर देखा। उसकी बांबी बड़ी मुश्किल से दिखाई पड़ रही थी। वह एक पत्ती पर बैठकर सोचने लगी :

"ज़रा सुस्ता लूं, थोड़ी देर में वापस नीचे उतर जाऊंगी।"

चींटियों के घर के नियम बड़े सख़्त होते हैं। शाम को जैसे ही सूरज डूबने लगता है, सभी चींटियों को झटपट घर वापस पहुंचना पड़ता है। सूरज के डूबते ही बांबी की सभी सुरंगों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। इसके बाद चींटियां सो जाती हैं। अगर एक भी चींटी देर से घर लौटती है तो उसे बाहर ही रात बितानी पड़ती है।

सूरज जंगल की ओर ढलने लगा था। लेकिन चींटी थी कि मज़े से उस पत्ती पर बैठी हुई थी। "अभी जल्दी भी क्या है? ढेर सारा समय पड़ा है। नीचे उतरने में ज़्यादा देर भी नहीं लगेगी।" उसने मन ही मन सोचा।

चींटी जिस पत्ती पर बैठी थी, वह एक बेजान, सूखी सी पीली पत्ती थी। अचानक हवा का एक तेज़ झोंका आया और उसने पत्ती को शाखा से अलग कर दिया।

पत्ती उड़ चली – जंगल, नदी और गांव के पार चींटी पत्ती पर बैठी डोलती रही, डर के मारे बेचारी का कलेजा कांप रहा था।

हवा ने गांव के उस पार एक चरागाह में पत्ती को ला फेंका। पत्ती एक पत्थर पर गिरी। और पत्थर से टकराकर चींटी की नाज़ुक टांगों पर चोट लगी।

"आह, मैं बेमौत मारी गयी। अब मैं अपने घर कभी वापस न लौट पाऊंगी। यह इलाका तो समतल है। अगर सही-सलामत होती, तो झटपट अपने घर वापस पहुंच सकती थी। पर अब मैं अपनी दुखती टांगें लेकर कहां जाऊं?" वह ज़मीन पर पड़ी हुई सोच रही थी।

तभी उसने देखा कि पास ही एक "ज़मीननाप" केंचुवा लेटा हुआ है। यह दूसरे केंचुवों जैसा ही एक केंचुवा था। फ़र्क बस इतना-सा था कि यह पैरोंवाला था – दो पैर आगे और दो पैर पीछे।

"केंचुवे, केंचुवे, मुझे घर तक पहुंचा दो। मेरी टांगें दुख रही हैं!" चींटी ने कहा।

"काटोगी तो नहीं?"

"नहीं-नहीं, बिल्कुल नहीं।"

"तो चलो, ले चलता हूं।"

चींटी केंचुवे की पीठ पर चढ़ गयी। केंचुवे ने पीठ सिकोड़कर अपने पिछले पैरों को आगे बढ़ाया, उन्हें अगले पैरों से सटा लिया। इस तरह उसकी दुम सिर के ठीक पास आ गयी। फिर वह अचानक अपनी लम्बाई तक ऊपर उठा और ज़मीन पर छड़ी की तरह पसर गया। उसने अपने बराबर ज़मीन की लम्बाई नाप ली और फिर से पहले की तरह अपनी पीठ सिकोड़ ली। बस, इस तरह वह ज़मीन नाप-नापकर आगे बढ़ता रहा। चींटी बेचारी पल में आसमान छूती और पल में ज़मीन, पल में ऊपर उठती, पल में नीचे आती।

"मुझसे रहा नहीं जाता! ठहरो! ठहरो, नहीं तो काट लूंगी!"
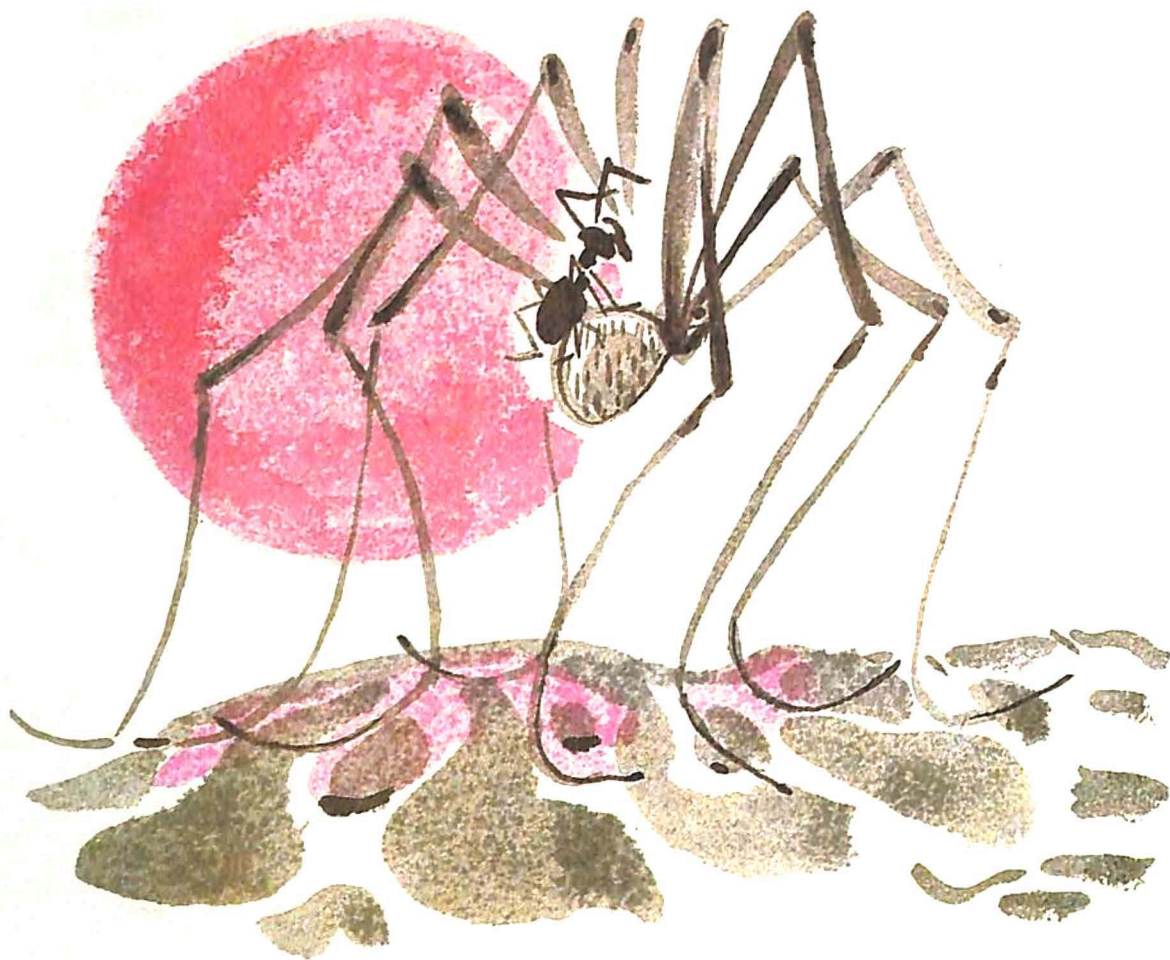
केंचुवा रुका और ज़मीन पर पसर गया। चींटी उसकी पीठ से ज़मीन पर उतर गयी। बड़ी मुश्किल से उसकी सांस में सांस आयी।

उसने अपने आस-पास नज़र दौड़ायी। सामने चरागाह में कटी हुई घास के ढेर लगे हुए थे। चरागाह में लम्बी-लम्बी टांगोंवाला मकड़ा टहल रहा था। उसकी टांगें क्या थीं, गेंडियां थीं और उनके बीच उसका सिर झूल रहा था।

"मकड़े, मकड़े, मुझे घर पहुंचा दो! मेरी टांगें दुख रही हैं।"

"आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

चींटी को पहले तो मकड़े की लग्गी जैसी टांग पर घुटने तक चढ़ना पड़ा और फिर उसकी पीठ तक पहुंचने के लिए उतना ही नीचे उतरना पड़ा। क्योंकि मकड़े के घुटने उसकी पीठ से ज़्यादा ऊंचे होते हैं।

चींटी मकड़े की पीठ पर सवार हो गयी और मकड़ा चल पड़ा। उसकी एक टांग यहां होती तो दूसरी वहां, गेंडी जैसी आठों टांगें चींटी की आंखों में बार-बार कौंधने लगीं। मकड़े की चाल काफ़ी धीमी थी और वह पेट के बल ज़मीन पर घिसटता हुआ चल रहा था।

चींटी इस मकड़-चाल से ऊब गयी। वह उसे काटने ही जा रही थी कि वे दोनों समतल रास्ते पर आ पहुंचे।

मकड़ा रुक गया।

"उतर जाओ," उसने कहा। "वह देखो, कैराबस जा रहा है। वह मुझसे कहीं ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

चींटी मकड़े की पीठ से उतर गयी।

"कैराबस, कैराबस, मुझे घर पहुंचा दो! मेरी टांगें दुख रही हैं।"

"आओ, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

जैसे ही चींटी कैराबस की पीठ पर सवार हुई, वह सरपट दौड़ने लगा। कैराबस की टांगें घोड़े की तरह सीधी होती हैं। छह टांगोंवाला "घोड़ा" हवा से बातें करता दौड़ता जा रहा था।

शीघ्र ही वे दोनों आलू के एक खेत में पहुंच गये।

"बस, अब यहीं उतर जाओ," कैराबस ने कहा। "इन ऊंची-ऊंची क्यारियों पर चढ़ना-उतरना मेरे बस की बात नहीं। बेहतर हो तुम कोई और सवारी ढूंढ़ लो।"

चींटी को उतरना पड़ा।

चींटी के लिए आलू का खेत तो घना जंगल ही था। टांगें सही-सलामत होने पर भी इसे पार करने में पूरा दिन लग जाता। उधर सूरज डूबने में थोड़ी ही देर रह गयी थी।

अचानक चींटी ने किसी की महीन आवाज़ सुनी :

"चींटी बहन, इधर आकर मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें खेत पार करा दूंगा।"

चींटी ने मुड़कर देखा – पास ही एक पिस्सू खड़ा था, ज़मीन पर मुश्किल से दिख रहा था।

"तुम मुझे उठा नहीं सकते। ज़रा देखो कितने छोटे हो तुम!"

"तो तुम ख़ुद को बहुत बड़ी समझती हो? कहा न, बैठ जाओ।"

चींटी पिस्सू की पीठ पर जैसे-तैसे टांगें टिकाकर बैठ गयी।

"बैठ गयीं न?"

"हां, बैठ ही गयी।"

"तो फिर गिरना नहीं!"

पिस्सू ने स्प्रिंग जैसे अपने पिछले पैर मोड़कर अपने तले दबाये, फिर चट्ट से उन्हें सीधा कर लिया और उछलकर ऊंची क्यारी पर चढ़ गया। चट्ट से दुबारा उछला और अगली क्यारी पर जा पहुंचा। तीसरी बार फिर चट्ट की आवाज़ सुनाई दी। अब वह तीसरी क्यारी पर चढ़ चुका था।

इस तरह उछलते हुए वह चींटी को खेत की बाड़ तक ले गया।

"क्या तुम उछलकर बाड़ को पार नहीं कर सकते?" चींटी ने पिस्सू से पूछा।

"बाड़ मैं नहीं लांघ सकता। टिड्डे से कहो, वह इसे फांद सकता है।"

"टिड्डे, टिड्डे, मुझे घर पहुंचा दो! मेरी टांगें दुख रही हैं।"

"आओ, मेरी गरदन पर सवार हो जाओ।"

चींटी टिड्डे की गरदन पर सवार हो गयी।

टिड्डे ने अपने पिछले पैरों को आधा मोड़ा और फिर झट से उन्हें सीधा किया। तेज़ झटके के साथ वह पिस्सू की तरह हवा में उछला। तब एक तीखी कड़कड़ाहट के साथ उसके पंख खुल गये और वह खेत की बाड़ के उस पार निकल गया। फिर धीरे से ज़मीन पर उतर गया।

"बस, हम पहुंच गये," टिड्डे ने कहा।

चींटी ने आगे नज़र डाली और देखा कि वहां नदी बह रही है। वह तो साल भर तैरती रहे, तो भी उसे पार न कर पाये।

सूरज आसमान पर और भी नीचे उतर आया था।

टिड्डा बोला:

"मैं भी इतनी लम्बी छलांग नहीं लगा सकता। नदी बहुत चौड़ी है। लेकिन घबड़ाओ नहीं, ज़रा ठहरो। मैं अभी जलभंवरे को बुलाता हूं। वह तुम्हें पीठ पर बैठाकर नदी पार करा देगा।" टिड्डे ने जलभंवरे को अपनी बोली में आवाज़ दी। शीघ्र ही एक बहुत

छोटी नाव तट की ओर पैरों पर बढ़ती दिखलाई दी। लेकिन करीब आने पर पता लगा कि यह कोई नाव नहीं है बल्कि जल की सतह पर चलनेवाला कीड़ा है – जलभंवरा।

"जलभंवरे, जलभंवरे, मुझे घर पहुंचा दो! मेरी टांगें दुख रही हैं।"

"आओ, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

चींटी उसकी पीठ पर बैठ गयी। जलभंवरे ने एक छलांग लगायी और फिर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ नदी के दूसरे किनारे की ओर चल पड़ा। जल पर वह ऐसे चला जा रहा था जैसे कि ज़मीन पर दूरियां नाप रहा हो।

सूरज बिल्कुल ही नीचे उतर आया था।

"अरे, मेरे भैया, और तेज़ चलो न!" चींटी ने विनती की। "देर हो गयी तो घर में घुसने नहीं देंगे।"

"लो, तेज़ चलते हैं।" जलभंवरा बोला।

और वह सिर पर पैर रखकर नदी पार करने लगा। वह पैरों से ज़ोर लगाता और फिर जल पर ऐसे सरकता जैसे बर्फ़ पर फिसलता हुआ दौड़ रहा हो। इस तरह वे थोड़ी देर में नदी के दूसरे किनारे पर जा पहुंचे।

"तुम ज़मीन पर नहीं चल सकते ?"

"ज़मीन पर चलना मेरे लिए मुश्किल है, वहां मेरे पैर नहीं फिसलते। और फिर आगे तो जंगल है। कोई दूसरी सवारी ढूंढ़ो।"

चींटी ने सामने नज़र दौड़ायी। जंगल में ऊंचे-ऊंचे वृक्ष आसमान से बातें कर रहे

थे और सूरज उन वृक्षों के पीछे छिप गया था। अब बेचारी चींटी घर नहीं पहुंच पायेगी।"

सहसा जलभंवरे ने कहा :

"उधर देखो तुम्हारे लिए एक 'घोड़ा' चला आ रहा है।"

पर वह तो भारी डीलडौलवाला एक भद्दा गुबरैला था। भला, ऐसे घोड़े पर सवार होकर कोई दूर तक जा सकता है? फिर भी चींटी ने जलभंवरे की सलाह मान ली।

"गुबरैले, गुबरैले, मुझे घर पहुंचा दो! मेरी टांगें दुख रही हैं।"

"तुम रहती कहां हो?"

"जंगल के पार बांबी में।"

"बड़ी दूर है। ख़ैर, कोई बात नहीं। बैठ जाओ, पहुंचा देता हूं।"

चींटी गुबरैले की कठोर पीठ पर चढ़कर सवार हो गयी।

"बैठ गयी हो न?"

"हां, बैठ गयी हूं।"

"लेकिन यह तो बतलाओ कहां पर बैठी हो?"

"पीठ पर।"

"अरी, बुद्धू! पीठ पर नहीं, सिर पर बैठो।"

चींटी गुबरैले के सिर पर बैठ गयी। यह उसने ठीक ही किया कि पीठ से हट गयी। देखते ही देखते गुबरैले की पीठ दो हिस्सों में बंट गयी, दो कठोर पंख धीरे से उठे। ये पंख उलटी हुई लम्बी कठौतियों जैसे थे। इनके नीचे से दो महीन-महीन पारदर्शी पंख कंपकंपाते हुए फैलने लगे जो ऊपरवाले पंखों से अधिक चौड़े और लम्बे थे।
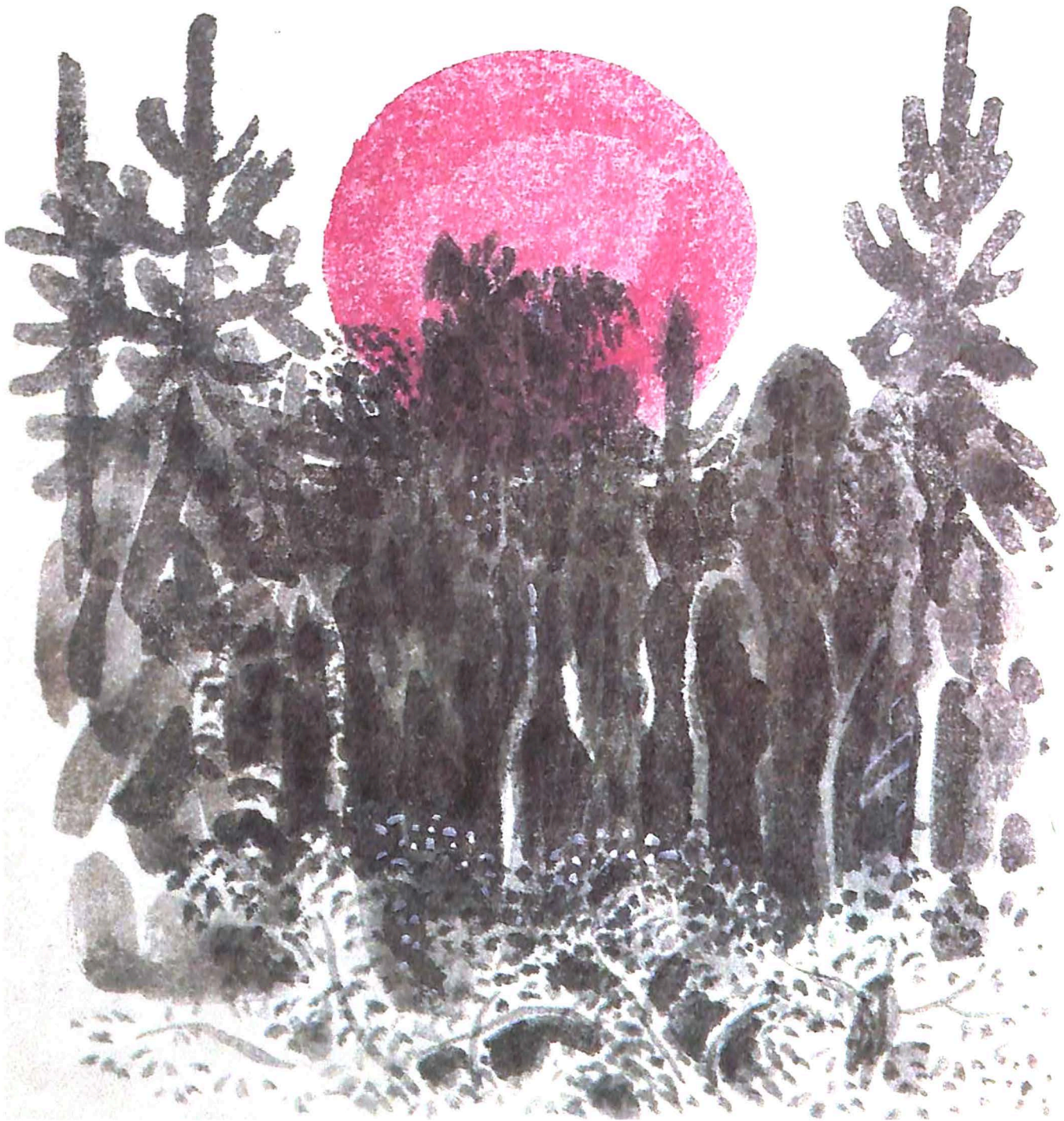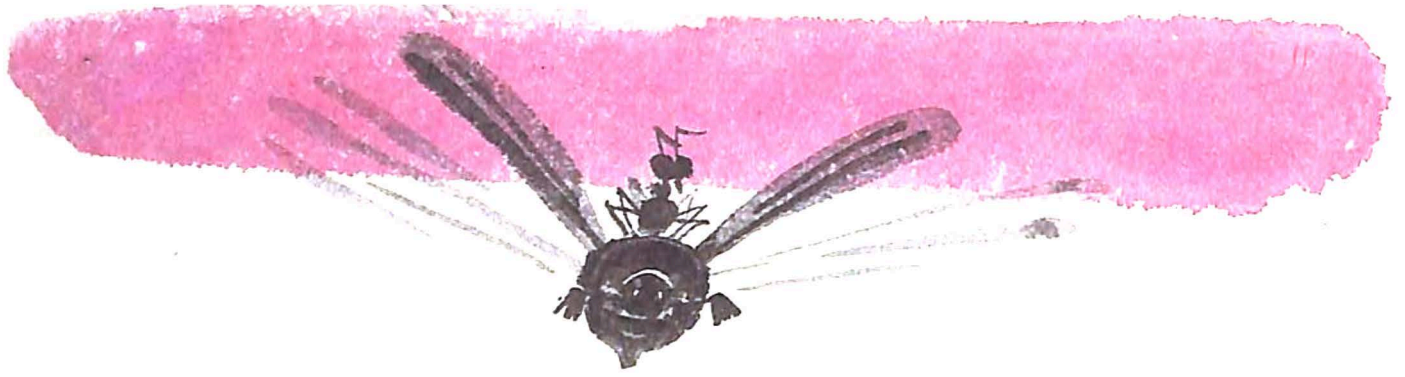
"हफ़, हफ़, हफ़!" गुबरैले ने ज़ोर-ज़ोर से सांस छोड़ना शुरू किया जैसे कोई मोटर स्टार्ट कर रहा हो!

"गुबरैले दादा, जल्दी करो न! जल्दी से चलो," चींटी ने चिरौरी की।

गुबरैला कुछ न बोला। बस हफ़, हफ़ किये जा रहा था।

अचानक उसके पारदर्शी पंख हवा में लहराने लगे। धीरे-धीरे उनकी चाल तेज़ होती गयी। झझ... झझ..! टक... टक..! हवा ने बोतल कार्क की तरह गुबरैले को उछाला और जंगल के ऊपर तक पहुंचा दिया।

चींटी ने ऊपर से देखा कि सूरज धरती को छू रहा है। वे इतनी तेज़ी से उड़ रहे थे कि चींटी का नन्हा कलेजा थरथर कांपने लगा। झझ... झझ! टक... टक! गुबरैला सनसनाती गोली की तरह हवा को चीरता हुआ उड़ता चला जा रहा था।

नीचे क्षणभर के लिए जंगल चमका और फिर गायब हो गया। वह जाना-पहचाना भोज वृक्ष आ गया कि ठीक नीचे चींटियों की बांबी थी। गुबरैले ने भोज की फुनगी के ऊपर पहुंचते ही अपनी मोटर बन्द कर दी और छपाक से एक डाल पर बैठ गया।

"लेकिन मैं नीचे कैसे उतरूंगी? मेरी तो टांगें दुख रही हैं। ऐसी टांगों से उतरते हुए मेरी गर्दन ही टूट जाएगी," चींटी गिड़गिड़ायी।

गुबरैले ने अपने महीन पंख समेट लिये और उन्हें ऊपरवाले कड़े पंखों से ढंक दिया। बड़ी सावधानी से उसने अपने महीन पंखों के किनारे कड़े पंखों के नीचे छिपा लिये।

क्षणिक खामोशी के बाद वह बोला:

"तुम कैसे नीचे उतरोगी मुझे मालूम नहीं। चींटियों की बांबी पर तो मैं जाने से रहा। तुम सब बहुत ज़ोर से काटती हो! जैसे मर्ज़ी उतरो।"

चींटी ने भोज के नीचे बने अपने घर को देखा। फिर उसने सूरज की ओर देखा जो कि आधा धरती में समा चुका था।

चींटी ने चारों ओर नज़र दौड़ायी: उसके इर्द-गिर्द पत्तियां और शाखाएं ही थीं। नहीं, बेचारी चींटी घर नहीं पहुंच पायेगी। अब वह नीचे छलांग लगाये – सिर्फ़ यही एक चारा था।

अचानक देखती क्या है कि थोड़ी दूर पर एक कीड़ा एक पत्ती पर बैठा हुआ है और पेट में से रेशमी धागा निकाल-निकालकर एक छोटी टहनी पर लपेटता जा रहा था।

"कीड़े भाई, कीड़े भाई, मुझे घर पहुंचा दो! बस, एक मिनट और बाक़ी है। घर के दरवाज़े बन्द हो जाएंगे तो रात बाहर काटनी पड़ेगी।"

"हटो, हटो! देखती नहीं मैं काम कर रहा हूं – रेशमी धागा कात रहा हूं।" रेशम का कीड़ा बड़बड़ाया।

"सबने मुझ पर तरस खाया है, किसी ने मुझे दुतकारा नहीं। तुम ही पहले ऐसे मिले हो।" यह कहकर चींटी कीड़े पर टूट पड़ी और उसने खूब ज़ोर से उसे काट लिया।

कीड़े ने डर के मारे पंजे सिकोड़ लिये और वह पत्ती से लुढ़क गया। चींटी उसकी पीठ से चिपकी बैठी थी। पर वे अधिक दूर तक न गिरने पाये, ऊपर से किसी ने एक झटके से उन्हें रोक लिया।

वे दोनों रेशमी धागे पर झूल रहे थे – रेशमी धागा टहनी पर जो लिपटा हुआ था।

रेशमी कीड़े पर सवार चींटी झूले की तरह धागे पर आगे-पीछे झूल रही थी। उधर धागा लम्बा ही लम्बा होता जा रहा था: कीड़े के पेट से बाहर निकलता आ रहा था, बराबर खिंचता जा रहा था, पर टूट नहीं रहा था।

कीड़े की पीठ पर बैठी चींटी नीचे ही नीचे उतरती जा रही थी।

नीचे बांबी में चींटियां जल्दी-जल्दी दरवाज़े बन्द करने में लगी हुई थीं। सभी दरवाज़े बन्द कर चुकी थीं। बस आखिरी दरवाज़ा बचा था।

चींटी ने कीड़े की पीठ से कलाबाज़ी खायी और झट से अपनी बांबी में घुस गयी। ठीक इसी समय सूरज भी डूब गया।

पहला शिकार

नन्हा पिल्ला आंगन में मुर्गियों के पीछे भागता-भागता उकता गया।

"क्यों न चलकर जंगली जानवरों और चिड़ियों का शिकार किया जाये?" उसने सोचा।

पिल्ला लपककर गेट के नीचे से बाहर खिसक गया और मैदान में भाग चला।

जंगली जानवरों, चिड़ियों और कीड़े-मकोड़ों ने उसे देखा और सब मन ही मन सोचने लगे।

जुनबगले ने सोचा: "मैं उसे चकमा दे दूंगा!"

कठफोड़वे ने सोचा: "मैं उसे चक्कर में डाल दूंगा!"

सर्पकंठी काली चिड़िया ने सोचा: "मैं उसे डरा दूंगी!"

छिपकली ने सोचा: "मैं उसके चंगुल में से छूट निकलूंगी!"

सूंड़ियों, तितलियों, टिड्डों ने सोचा: "हम छिप जायेंगे!"

"और मैं उसे भगा दूंगा," दूरभगाऊ गुबरैले ने सोचा।

"हम सब अपने-अपने ढंग से अपना-अपना बचाव कर सकते हैं," उन्होंने मन ही मन सोचा।

इस बीच पिल्ला तालाब के पास पहुंच गया था। उसने देखा : सरकंडों के पास जुन-बगला एक टांग पर घुटने-घुटने पानी में खड़ा है।

"अभी मैं इसे पकड़ लेता हूं!" पिल्ले ने सोचा और उस पर छलांग मारने को तैयार हो गया।

इधर जुनबगले ने उसे देखा और सरकंडों में घुस गया।

तालाब पर हवा चली। हवा ने सरकंडों को लहराया। सरकंडे डोलने लगे :

आगे-पीछे,
आगे-पीछे।

पिल्ले की आंखों के सामने भूरी-पीली धारियां डोलने लगीं :

आगे-पीछे,
आगे-पीछे।

जुनबगला सरकंडों में खड़ा था। खुद भी तनकर सरकंडे से पतला हो गया था और उसके सारे शरीर पर भूरी-पीली धारियां थीं।

वह खड़ा-खड़ा डोल रहा था:

आगे-पीछे,
आगे-पीछे।

पिल्ला आंखें फाड़-फाड़कर देखता रहा, देखता रहा पर जुनबगला सरकंडों में दिखा ही नहीं।

"ख़ैर, जुनबगला तो मुझे चकमा दे गया," उसने सोचा। "अब मैं खाली सरकंडों में थोड़े ही कूदूंगा। चलो, कोई दूसरी चिड़िया पकड़ता हूं।"

पिल्ला भागा-भागा एक छोटे से टीले पर पहुंचा, देखा: ज़मीन पर कठफोड़वा बैठा अपनी कलगी से खेल रहा था, कभी उसे फैलाता, कभी समेटता।

"अभी मैं टीले से उस पर कूदता हूं," पिल्ले ने सोचा।

मगर कठफोड़वा ज़मीन पर सपाट लेट गया, पंख बिछा दिये, पूंछ फैला दी और चोंच ऊपर को उठा ली।

पिल्ले ने देखा: चिड़िया तो है ही नहीं, ज़मीन पर बस कपड़े का रंग-बिरंगा चिथड़ा पड़ा है और उसमें से टेढ़ी सुई ऊपर को निकली हुई है।

पिल्ला चकरा गया: कहां गया कठफोड़वा?

"अरे, क्या मैं इस रंग-बिरंगे चिथड़े को कठफोड़वा समझ बैठा था? चलके जल्दी से कोई छोटी चिड़िया पकड़ता हूं।"

पिल्ला भागा-भागा पेड़ के पास पहुंचा और देखा: टहनी पर छोटी सी चिड़िया बैठी है।

वह उसकी ओर लपका। चिड़िया फुर्र से उड़ी और कोटर में घुस गयी।

"वाह, वाह! आ गयी पकड़ में!" पिल्ले ने सोचा।

पिछले पैरों पर खड़े होकर उसने काले कोटर में झांका। काले कोटर में काला सांप गुस्से से बल खाता फुंकार रहा था।

पिल्ले के रोंगटे खड़े हो गये। वह झट से पीछे हटा और दुम दबाकर भाग चला।

कोटर में चिड़िया उसके पीछे फुंकार रही थी, सिर फन की तरह हिला रही थी और उसकी पीठ पर काले बालों की पट्टी सांप की तरह बल खा रही थी।

"बाप रे, यहां तो डर के मारे जान निकल गयी। मरते-मरते बचा। अब कभी चिड़ियों का शिकार नहीं करूंगा। इससे तो अच्छा कोई छिपकली पकड़ता हूं।"

छिपकली आंखें बंद किये पत्थर पर बैठी धूप सेंक रही थी।

पिल्ला चुपके-चुपके छिपकली के पास पहुंचा और झपटकर उसकी दुम दबोच ली।

लेकिन छिपकली बल खाकर उसके चंगुल से छूट निकली, बस अपनी दुम उसके मुंह में छोड़ गयी और खुद पत्थर के नीचे भाग गयी।

पिल्ले के मुंह में छिपकली की दुम फड़क रही थी।

उसने दुम थूक दी और छिपकली के पीछे भागा। लेकिन वह तो कब की पत्थर के नीचे दुबकी बैठी नयी दुम उगा रही थी।

"अरे, यह छिपकली तक मुझसे छूट निकली है। अच्छा तो मैं कीड़े-मकोड़े ही पकड़ लेता हूं," पिल्ले ने सोचा।

उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी: ज़मीन पर गुबरैले इधर-उधर भाग रहे थे, घास में टिड्डे कूद रहे थे, पत्तियों पर सूंड़ियां रेंग रही थीं और तितलियां उड़ रही थीं।

पिल्ला उन्हें पकड़ने लपका और अचानक चारों ओर सब जादुई तस्वीर सा हो गया: अभी तो सब कीड़े-मकोड़े यहां थे और अब कोई दिखायी ही नहीं दे रहा। सब छिप गये।

हरे टिड्डे हरी घास में दुबक गये।

सूंड़ियां टहनियों पर सीधी हो गयीं और हिलना-डुलना बंद कर दिया, इसलिए पता ही नहीं चलता था कहां टहनी है कहां सूंड़ी।

तितलियों ने पेड़ों पर बैठकर अपने पंख समेट लिये – कुछ समझ में नहीं आता था: कहां छाल है, कहां पत्तियां और कहां तितलियां।

बस एक छोटा सा दूरभगाऊ गुबरैला ज़मीन पर चला जा रहा था और कहीं छिप नहीं रहा था।

पिल्ला भागा-भागा उसके पास पहुंचा। वह उसे झपटना ही चाहता था कि दूरभगाऊ गुबरैले ने रुककर अपनी सड़ांध भरी थूक की तीखी धार पिल्ले की नाक पर दे मारी।

पिल्ला चीख उठा, दुम दबाकर पीछे मुड़ा और भाग चला। एक ही सांस में उसने मैदान पार किया और फाटक के नीचे से आंगन में घुस गया।

वहां वह अपने कुत्ताघर में दुबककर बैठ गया। अब उसे थूथनी बाहर निकालते भी डर लग रहा था।

उधर जानवर, चिड़ियां, कीड़े-मकोड़े सब फिर से अपने-अपने कामों में लग गये।

प्यारे बच्चो,

कैसी लगी तुम्हें ये कहानियां? अच्छी हैं न? हमें अपनी राय लिखना। इसे जानकर हमें बड़ी खुशी होगी और हम तुम्हारी पसंद की नयी-नयी किताबें छापेंगे।

हमारा पता है:
राडुगा प्रकाशन,
१७ ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।